शुक्रनीति में वर्णित पर्यावरण संरक्षण

डॉ लज्जा पन्त (भट्ट)
एसोसिएट प्रोफेसर-संस्कृत विभाग
कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड

भारतीय नीतिशास्त्र के इतिहास में शुक्राचार्य का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। आचार्य शुक्र अपने युग के एक महान् ऋषि तथा नीतिज्ञ थे। उनके पर्याय शब्द उशना, काव्य,भार्गव आदि हैं। महाभारत में 'उशना' के रूप में शुक्राचार्य की नीतियों का अनेकश:[1] उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त भार्गव,काव्य[2] आदि शब्द से भी शुक्राचार्य का संकेत किया गया है। शुक्राचार्य द्वारा किए गए ब्रह्म नीति शास्त्र के संक्षिप्त रूप के निर्देश के प्रसंग में 'महाभारत' के अंतर्गत इन्हें 'अमितप्रज्ञ:'[3] 'महायशा:' आदि उपाधियों से विभूषित किया गया हैं। अन्यान्य प्राचीनग्रंथो में भी शुक्राचार्य की नीति की अत्यंत प्रसंशा की गयी हैं। कौटिलीय अर्थशास्त्र के प्रारंभ में ऋषि-वंदना में शुक्र-बृहस्पति को नमन (नम: शुक्रबृहस्पतिभ्याम्) स्पष्ट कर देता है कि कौटिल्य के युग तक आचार्य शुक्र ख्यातिलब्ध आचार्य माने जा चुके थे। आचार्य शुक्र के ग्रन्थ शुक्रनीति में दो हजार दो सौ श्लोक मौलिक तथा अन्य विविध श्लोकों को मिलाकर कुल दो हजार चार सौ चवन श्लोक हैं। शुक्रनीति राजनीति का प्रख्यापक ग्रन्थ है। जिसके अध्ययन से तत्कालीन भारतीय समाज, उसके चिंतन तथा प्रकृति पर प्रकाश पड़ता हैं। शुक्रनीति सामाजिक हित तथा सामाजिक सुरक्षा की दिशा को प्रशस्त करने में हमारा मार्गदर्शन करती है।राजनीतिक तथा आर्थिक चिंतन के अतिरिक्त 'शुक्रनीति' मानव आचरण के लिए मानदंड भी निहित करती हैं।

पर्यावरण शब्द अंग्रेजी के एक शब्द(Environment) का हिंदी पर्यायवाची शब्द हैं। संस्कृत में पर्यावरण शब्द परि, आङ् उपसर्गपूर्वक वृञ् (वृ)वरणे धातु से ल्युट् प्रत्यय होने पर बनता हैं। परि (चारों ओर)+आवरण (घेरा)=पर्यावरण, भाव यह हुआ कि चारों ओर से किसी को ढकना अथवा घेरना ही पर्यावरण हैं। जीवधारी के चारों ओर कावातावरण जो उसके अस्तित्व की रक्षा करने में सहायक होता हैं, वही पर्यावरण के नाम से व्यवहृत होता हैं। मनुष्य के आस-पास में होने वाली वस्तुएँ उसके अस्तित्व की रक्षामें सहायक तत्व उसके चारों ओर का वातावरण उसका पर्यावरण हैं, मनुष्य तथा विभिन्न पशु-पक्षियों का निवास स्थान पृथिवी पर होता हैं।उन्हें जीने की शक्ति पेड़-पौधों से ही मिलती हैं।सूर्य से ऊर्जा प्राप्त होती है। बादल से पानी मिलता है, वायु जीवन प्रदान करती है। इस प्रकार ये सम्पूर्ण मानव जीवन के आधार हैं तथा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति इन्हीं के माध्यम से करते हैं, फलत: पृथिवी तत्त्व मानव का पर्यावरण हैं।यदि इस तत्व में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो जायेगा, उसका प्रदूषण मानव के लिए विनाशकारी हैं।उसकी

©Indira Gandhi National Open University

स्वस्थता मानव के सुखमय जीवन में सहायक है। मानव पर्यावरण से सम्बंधित यह पृथिवी तत्व उन तत्वदर्शी ऋषियों की सूक्ष्म अंतर्दृष्टि से अपरिचित नहीं रहा, ऋषियों ने मानव जीवन के लिए इस तत्त्व की उपयोगिता को भली-भाँति समझा है तथा पृथिवी तत्व को अत्यधिक महत्व दिया है।वैदिक ऋषियों ने उसे मानव की जन्मदात्री होने के कारण माता का स्थान दिया है-

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (अथर्ववेद 12/1/12)

संस्कृत भाषा निबद्ध ग्रंथों में प्रकृति के संरक्षण को मानव के नैतिक कर्त्तव्य के रूप में स्वीकार किया गया है। वेदों से लेकर अद्यावधि हमारे ऋषिमुनियों, मनीषियों, पर्यावरणविदों आदि द्वारा रचित नीतिग्रंथों तथा अन्य समस्त कृतियों में मानव के लिए विधि तथा निषेध की चर्चा कर मनुष्य को एक उचित मार्ग प्रदान करने का कार्य किया गया है। आज भौतिकता की चकाचौंध में संलिप्त भौतिक भोगभुक्त मनुष्य हमारे परम्परागत ज्ञान आदि पर प्रश्नचिन्ह लगाने का दुष्प्रयास भले ही करता है किन्तु परमात्मा द्वारा विरचित इस संसार में मनुष्य को किस प्रकार का आचरण करना है इस बात का हमारे पूर्वजों को भली-भाँति ज्ञान था। वर्तमान में विकसित समाज जिसे विकास समझता है, हमारे पूर्वजों ने उसे विनाश नाम दिया है।वर्तमान में विकाश के नाम पर प्रकृति का जो दोहन किया जा रहा है वह किसी से छिपा नहीं है। आज जिस गति से वृक्षों का कटान हो रहा है वह वर्तमान तथा भविष्य के लिए उचित नहीं है। आज हमारे द्वारा विकास के नाम पर किया गया विनाश भावी पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनेगा।

हमारे पूर्वजों ने मनुष्य के हृदय में वन,वनस्पतियों के प्रति प्रीति तथा आदर भाव जाग्रत करने के उद्देश्य से उक्त विषय को व्यक्ति के जीवन, आचरण, जाति, धर्म आदि का प्रतीक बताकर उनका संरक्षण सुनिचित करवाया।उदाहरणार्थ आज हजारों वर्षों बाद आधुनिक विज्ञान इस बात को सिद्ध कर पाया है कि पीपल का वृक्ष मानव जीवन के लिए परमावश्यक आक्सीजन गैस (वायु) को प्रायः 24 घंटे प्रदान करता है।किन्तु हमारे पूर्वजों ने इस बात को सभ्यता के आदि में ही समझ लिया था। मानव की स्वार्थपरायणता तथा स्वभाव को जानते हुए उन्होंने उसके संरक्षण हेतु उसे देववृक्ष नाम दे दिया अथवा पूजनीय वृक्ष आदि सम्बोधित कर उक्त वृक्ष के वैशिष्ट्य को जनसाधारण के ज्ञान का विषय बनाया।इसी प्रकार तुलसी, आम, देवदार, नीम, आदि वृक्षों के गुणों को प्रकाशित करते हुए उनका संरक्षण किया। आज मानव स्वार्थपरायण होता हुआ अहर्निश पृथिवी का दोहन करके पर्यावरण को दूषित करता हुआ विविध प्रकार के असाध्य रोग, कोरोना आदि महामारियों को आमंत्रण देकर मृत्यु को आमंत्रित कर रहा है।आज समाज में आवश्यकता इस बात की है कि वह हमारे प्राचीन ग्रंथों में प्रकृति के संरक्षण से पर्यावरण को 'यानि यानि अनवद्यानि तानि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि' आदि महत्वपूर्ण उपनिषदीय वाक्यों को ध्यान में रखकर प्रकृति के अहर्निश होने वाले दोहन को रोकने का प्रयास करें, क्योंकि यदि इसी गति से वृक्षों, वनों, नदियों,

©Indira Gandhi National Open University

पर्वतों आदि का दोहन होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व को प्रकृति के रौद्र रूप के दर्शन होंगे जिसमें सम्पूर्ण प्राणिवर्ग (जड़ एवं चेतन) को भयानक अकल्पनीय परिणाम सहने होंगे।

आज मानव जाति के समक्ष अत्यंत गंभीर चुनौती है कि वह प्रकृति के श्रृंगारस्वरुप वृक्षों का संवर्धन किस प्रकार करे।इस स्थिति में मानवजीवन के समस्त पक्षों का आमूलचूल उद्घाटन करने वाले संस्कृत साहित्य की नीति परंपरा में आचार्य शुक्र विरचित शुक्रनीति में वन तथा वनस्पतियों के संरक्षण को राजकीय दायित्व बताकर निरन्तर ऋतुओं के अनुसार वृक्ष लगाने की विस्तार से चर्चा की गयी है-

ग्रामे ग्राम्यान्वने वन्यान् वृक्षान् संरोपयेन्नृपः।

उत्तपान् विंशतिकरैर्मध्यमांस्तिथि हस्ततः।।

सामन्यान्दशहस्तैश्च कनिष्ठान् पञ्चभिः करैः।

अजविगोशकृद्भिर्वा जलैर्मासैश्च पोषयेत्।।[4]

आचार्य शुक्र ने स्पष्ट कहा है कि जो वृक्ष गाँव में होने योग्य हैं उन्हें गाँव में तथा जो शहरों, नगरों आदि में होने योग्य हैं उनके उष्ण, शीतादि स्वभाव का अवलोकन कर उनका अनिवार्य रूप से रोपण करना चाहिए क्योंकि मनुष्य तथा अन्य प्राणियों की वृद्धि अनवरतरूप से हो रही है। अतः आवश्यक हो जाता है कि अधिक से अधिक वनों का विस्तार हो, वृक्षारोपण किया जाय, आज स्वार्थसिद्धि में संलिप्त मनुष्य इस बात को भूल गया है कि पृथिवी पर परमात्मा द्वारा निर्मित समस्त प्राणियों, वृक्षों, नदियों का संरक्षण तथा सम्मान करना मानव का परम धर्म है। मनुष्य को चाहिए कि वह हमारे नीतिग्रंथों में वर्णित कर्तव्याकर्तव्य का अध्ययन करें।

इसी सन्दर्भ में शुक्रनीतिकार प्रकृति के संरक्षण के क्रम में विविध वृक्षों का परिचय करते हुए उनके नाम तथा उनके विकास हेतु उचित स्थान के विषय में निर्देशित करते हैं-

खदिराश्मन्तशाकाग्निमन्थस्योनकबब्बुलाः।

तमाल-शाल-कुटज-धवार्जुन पलाशकाः।।

सप्तपर्ण-शमितुन्न-देवदारू-विकङ्कताः।

करमर्ददुदीभूर्ज-विषमुष्टि-करीरकाः।।

शल्लकी कश्मीरी पाठा तिन्दुको बीजसारकः।

हरीतकी च भल्लातः शम्पाकोऽर्कश्च पुष्करः।।

©Indira Gandhi National Open University

अरिमेदश्च पीतद्रुः शाल्मालिश्च बिभीतकः।

नरवेलो महावृक्षोऽपरे ये मधुकादयः।।

प्रतानवत्यः स्तम्बिन्यो गुल्मिन्यश्च तथैव च।

ग्राम्या ग्रामे वने वन्या नियोज्यास्ते प्रयत्नतः।।[5]

कहने का तात्पर्य यह है कि खैर का वृक्ष, अश्मन्तक, सागौन वृक्ष (जिसकी लकड़ी प्रायः बहुत ही कठोर होने के कारण मजबूत मानी जाती है), अरणी, सोनापाठा, बबूल, तमाल, शाल (शाल की लकड़ी प्रायः अत्यंत मजबूत काष्ठ माना जाता है। इसके संदर्भ में किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि साल का वृक्ष सौ साल खड़ा रहता है, सौ साल पड़ा रहता है तथा अंत में सौ साल सड़ने में समय लगाता है। इस प्रकार यदि शाल के वृक्ष की आयु पर विचार किया जाय तो इसकी आयु लगभग तीन सौ साल होती है।) कुटज, अर्जुन, पलाश के वृक्ष, धव, सातवन, शमी (भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है), तुन (तून), देवदारू (प्रायः हिमालय की उच्च पहाड़ियों में होता है), विकङ्कत, करौंदा, इंगुदी, भोजपत्र (यह हमारी संस्कृति का आधारभूत पत्ता है जिसमें प्राचीनकाल में विविध अभिलेखों को लिखने का कार्य किया जाता था), कुचिला,करीर, सलई, खम्मार, पाढर, तेंदू, विजयसार, हरड़, मिलावा, शम्याक, आक,पोहक, दुर्गन्ध, खैर,पीतद्रु, समेर, बहेड़ा, नरबेल, महावृक्ष इत्यादि ये समस्त वृक्ष गाँव तथा आरण्यक में होने वाले हैं, इसके अतिरिक्त आचार्य शुक्र कतिपय अन्य महत्वपूर्ण वृक्षों का उल्लेख करते हैं-

उदुम्बराश्वत्थवटचिञ्चाचन्दनजम्भलाः।

कदम्बाशोकबकुल बिल्वाम्रातकपित्थकाः।।

राजादनाम्र पुन्नाग तूदकाष्ठम्लचम्पकाः।

नीपकोकाम्र सरलदाड़िमाक्षोटभिस्सटाः।।

शिंशपाशिग्रुबदर-निम्बजम्बीरक्षीरिका।

खर्जूरदेवकरज फल्गुतापिच्छासिम्भलाः।।

कुद्दालो लवली धात्री क्रमुको मातुलुङ्कः।

लकुचो नारिकेलश्च रम्भाऽन्ये सत्फला द्रुमाः।।

सुपुष्पाश्चैव ये वृक्षा ग्रामाभ्यर्णे नियोजयेत्।

वामभागेऽथवोद्यानम कुर्य्याद् वासगृहे शुभम्।।[6]

©Indira Gandhi National Open University

यद्यपि वृक्ष असंख्यकोटि हैं किन्तु उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण वृक्षों का ही विवेचन अपने ग्रन्थ में किया है। आचार्य शुक्र को शुक्रनीति में वर्णित वृक्षों, वनस्पतियों के अतिरिक्त अन्य औषधीय अथवा सामान्य वृक्षों का ज्ञान था।वास्तव में महर्षि शुक्र कितनी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे इसका प्रमाण यह है कि संस्कृत साहित्य में आचार्य शुक्र को अमृत अथवा संजीवनी बूटी (औषधि) का एक प्रकार से अविष्कारक माना जाता है, महर्षि शुक्र ने कतिपय अन्य महत्वपूर्ण वृक्षों का विवेचन भी किया है।यथा-खैर, अश्मन्तक, सागवान,अरणी, सोनापाठा, बबूल, पीपल, बरगद, इमली, चन्दन, शीशम, सहिजन, बेर, खजूर, तमाल, चम्पा, कोकम, चीड़, सुपारी, आमला, नारियल, केला, आदि। उक्त सभी वृक्षों को शुक्राचार्य ने गाँव के आस-पास अथवा वन में लगाने हेतु उपयुक्त बताया है। इसके साथ ही अन्य वृक्षों को गाँव से इतर स्थानों में लगाने हेतु नीतिकार कहते हैं-

ये च कण्टकिनो वृक्षाः खादिराद्यास्तथापरे।

आरण्यकास्ते विज्ञेयास्तेषां तत्र नियोजनम्।।[7]

नीतिकार शुक्राचार्य को वास्तुकार का भी ज्ञान था।वर्तमान में हमारे समाज में अनेक स्थानों पर लोग घर के सामने काँटेदार वृक्षों को घर से दूर ही लगाते हैं।शुक्रनीतिकार ने अपने ग्रन्थ में काँटेदारवृक्षों को घर से दूर लगाने का आदेश दिया है।वृक्षों की विभिन्न प्रजातियों के नाम तथा गुणों का विवेचन करने के पश्चात् आचार्य शुक्र कहते हैं कि उपर्युक्त सभी प्रकार के वृक्षों की रक्षा करना राज्य के राजा तथा प्रजा दोनों का परम कर्त्तव्य है। अतःवे उनका यथोचित रोपण करते हुए उनका संरक्षण, संवर्धन करें।

आधुनिक समय में पेड़-पौधे मानव जीवन के संचालन में सहायक तथा प्रकृति के श्रृंगाररूप होते हुए भी धीरे-धीरे प्रकृति से लुप्तप्राय होते जा रहे हैं। प्रकृति में किये जा रहे अंधाधुंध दोहन तथा प्रदूषणों से पर्यावरण को जो हानि हुई है वह किसी से छिपी नहीं है।हमारे प्राचीन नीतिग्रंथों में उक्त वृक्षों का विवेचन संभवतःइसी बात को द्योतित करता है कि ये वृक्ष सभी कालों में प्रकृति एवं मानव के लिए उपकारक ही रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता इस बात है कि हम सभी को मिलकर पर्यावरण संरक्षण हेतु आगे आना होगा। नीतिकार आचार्य शुक्र वृक्षों के संरक्षण हेतु विविध उपाय बताते हुए कहते हैं कि वृक्षारोपण के उपरांत उनका सिंचन भी अत्यंत आवश्यक है-

सायं प्रातस्तु धर्मान्ते शीतकाले दिनान्तरे।
वसन्ते पञ्चमेऽहस्तु सेव्या वर्षासु न क्वचित्।।
फलनाशे कुलुत्थैश्च माषैर्मुद्गैर्यवैस्तिलैः।
श्रृतशील पयः सेकः फलपुष्पाय सर्वदा।।

©Indira Gandhi National Open University

मत्स्याम्भसा तु सेकनवृद्धिर्भवति शाखिनाम्।
आविकाजशकृञ्चूर्णं यवचूर्णं तिलानि च।।
गोमांसमुदकञ्चेति सप्तरात्रं निधापयेत्।
उत्सेकः सर्ववृक्षाणाम् फलपुष्पादिवृद्धिदः।।[8]

शुक्राचार्य जी ने केवल वृक्षों की प्रजातियों का विवेचन ही नहीं किया अपितु वृक्षों का संवर्धन कैसे हो सकता है इस पर भी विचार व्यक्त किये हैं।यद्यपि वृक्ष उद्भिज माने जाते हैं किन्तु उनका संरक्षण भी मानव संरक्षण की भांति ही अपेक्षित है इसलिए नीतिकार शुक्राचार्य कहते हैं- वृक्षों को शीत ऋतु में एक दिन छोड़कर हर दूसरे दिन जल से सींचना चाहिए, ग्रीष्म ऋतु में सुबह तथा सायंकाल, वसंत ऋतु में लगभग तीन से चार दिन में, किन्तु वर्षा ऋतु में जल से सींचने की आवश्यकता नहीं होती है।इससे ज्ञात होता है कि आचार्य शुक्र को प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण का सम्यक ज्ञान था।कदाचित् किसी वृक्ष के पत्ते, फूल गिरने लगे तो उसके लिए भी ग्रंथकार ने उपाय बताया है। शुक्राचार्य का कथन है कि यदि समयानुसार किसीवृक्ष का विकास न हो रहा हो तो भेड़, बकरी का मल, चूर्ण, तिल, जौं, गोमांस आदि को जल से मिलाकर पेड़ों की जड़ों में डालने से उसका विकास अच्छी तरह होता है वर्तमान में अनेक किसान तथा पर्यावरण से सम्बंधित कार्य करने वाले लोगों के लिए शुक्राचार्य जी द्वारा कहे गए उपाय लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं।

शुक्रनीतिकार के द्वारा वृक्षों के विविध प्रकार का विवेचन करने का उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि हम प्रकृति-प्रेमी बनें।वर्तमान में जिस पर्यावरण असंतुलन की समस्या से सम्पूर्ण विश्व दुष्प्रभावित हो रहा है उसके समाधान हेतु पूर्वजों द्वारा प्रत्येक प्राणिवर्ग के कल्याण की भावना से रचे गए नीतिविषयक ज्ञान द्वारा निश्चित ही लाभान्वित हुआ जा सकता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को नीतिविषयक ग्रंथों को अध्ययन तथा उन्हें आत्मसात करने की परमावश्यकता है।

सन्दर्भ-

1.महाभारत, शांतिपर्व 59/29-30,57/3
2.महाभारत, शान्तिपर्व 57/2
3.महाभारत, शान्तिपर्व 59/85
4.शुक्रनीति-चतुर्थाध्याय, लोकधर्मनिरूपण प्रकरण /46-47
5.शुक्रनीति-चतुर्थाध्याय, लोकधर्मनिरूपण प्रकरण /58-62
6.शुक्रनीति-लोकधर्मनिरूपण प्रकरण /48-52
7.शुक्रनीति-लोकधर्मनिरूपण /57
8.शुक्रनीति-लोकधर्मनिरूपण /53-56

©Indira Gandhi National Open University